

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य सत्र 1, परिचय, भाग 1, बाइबिल की कहानी, उद्धार की योजना, पूर्ति, लागू और पूर्णता

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1, परिचय, भाग 1, बाइबिल की कहानी, उद्धार की योजना, पूर्ति, लागू और पूर्ण होना है।

मसीह के उद्धार कार्य के बारे में एक साथ बात करना शुरू करने से पहले, आइए हम प्रार्थना में प्रभु से बात करें।

दयालु पिता, अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता, यहाँ तक कि हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजने के लिए आपका धन्यवाद। हमें आशीर्वाद दें, हमें प्रोत्साहित करें, हमें सिखाएँ, हम प्रार्थना करते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से। आमीन।

मसीह के कार्य पर आपको व्याख्यान देना मेरा सौभाग्य है, और आज हमारा परिचय है। हम जिन विषयों को कवर करने की योजना बना रहे हैं, वे हैं बाइबिल की कहानी, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को बाइबिल की कहानी के संदर्भ में रखना, एक पैनोरमा के रूप में उद्धार, जिसमें दुनिया के निर्माण से पहले नियोजित उद्धार शामिल है, जो पहली शताब्दी में पूरा हुआ, पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों के जीवन में लागू किया गया, और फिर धर्मी लोगों के पुनरुत्थान में परिणत हुआ। हमारे लिए थोड़ी देर के लिए धर्मशास्त्रीय पद्धति पर विचार करना अच्छा है, और हम ऐसा करने की योजना बना रहे हैं।

फिर मैं कुछ प्रमुख पुस्तकों के बारे में बात करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे प्रायश्चित के सिद्धांत का अध्ययन करने में मदद की है, या जैसा कि मैं इसे कहना पसंद करता हूँ, मसीह के उद्धार कार्य का सिद्धांत, क्योंकि यह सिर्फ प्रायश्चित से कहीं बड़ा है। मैं दो ऐसे अंशों पर बाइबिल की आवाज़ लेना चाहता हूँ जो इतने उत्कृष्ट और प्रभावशाली हैं, प्रत्येक नियम से एक, कि वे इसके लायक हैं, और वे पुराने नियम में यशायाह 53 और रोमियों 3, विशेष रूप से 25 और 26, नए नियम में महान प्रायश्चित पाठ हैं। फिर प्रायश्चित के सिद्धांत के इतिहास पर एक लंबा खंड।

मेरा मानना है कि हमारे लिए यह सोचना अच्छा होगा कि पहली सदी से लेकर बीसवीं सदी तक चर्च के नेताओं ने किस तरह से समझा कि यीशु ने हमें बचाने के लिए क्या किया। हमारा लक्ष्य उनमें से किसी की नकल करना नहीं है, बल्कि उनकी गलतियों से सीखना है, और खास तौर पर उन अच्छी बातों से जो उन्होंने पवित्रशास्त्र का अध्ययन करके और यीशु ने हमारे लिए क्या किया, इस बारे में सोचकर हासिल कीं। और फिर, अंत में, चूँकि मसीह का व्यक्तित्व और कार्य अविभाज्य हैं, इसलिए मसीह के सिद्धांत या क्राइस्टोलॉजी पर एक संक्षिप्त नज़र डालें, ताकि बेहतर ढंग से समझा जा सके कि उसने हमें बचाने के लिए क्या किया।

तो, बाइबिल की कहानी। मैं ईसाई धर्मशास्त्र, बाइबिल की कहानी और हमारे विश्वास को श्रेय देना चाहता हूँ, जिसे लिखने में मैंने मदद की। यीशु का उद्धार कार्य बाइबिल की कहानी का केंद्र है।

परमेश्वर सभी चीज़ों की रचना करता है और उन्हें बहुत अच्छा घोषित करता है। उत्पत्ति 1:31. वह आदम और हव्वा को अपनी ही समानता में, पवित्र और उसके साथ संगति में बनाता है।

दुखद बात यह है कि हमारे पहले माता-पिता अपने निर्माता और मित्र के खिलाफ विद्रोह करते हैं और उनके वचन की अवज्ञा करते हैं। ऐसा होते ही परमेश्वर छुटकारे का पहला वादा करता है। पुराने नियम का बाकी हिस्सा अदन में परमेश्वर के वादे पर आधारित है।

लैव्यव्यवस्था के बलिदान एक महान बलिदान की ओर संकेत करते हैं जो सभी बलिदानों को समाप्त कर देगा। भजन संहिता 22 में निर्दोष पीड़ित की बात कही गई है, जिसके हाथ और पैर छेदे जाएँगे, श्लोक 16, और जो चिल्लाएगा, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? श्लोक 1. यशायाह ने प्रभु के सेवक की भविष्यवाणी की है जो अपने लोगों को बचाने के लिए परोक्ष रूप से मरेगा। योना का बड़ी मछली के साथ अनुभव, उद्धारण, मनुष्य के पुत्र की भविष्यवाणी करता है जो, उद्धारण, तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा।

मत्ती 12, 40. चार सुसमाचार इस प्रतिज्ञा किए हुए व्यक्ति के आने की रिपोर्ट करते हैं, जिसका उद्धार कार्य उसकी कहानी का चरमोत्कर्ष है। परमेश्वर का शाश्वत पुत्र एक मानव प्राणी बन जाता है क्योंकि वह मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ धारण करता है, गलातियों 4:4। वह एक आदमी बन जाता है।

जॉन बैपटिस्ट ने उसे जॉर्डन नदी में बपतिस्मा दिया, और तुरंत, आत्मा ने उसे रेगिस्तान में धकेल दिया, जहाँ उसने शैतान के प्रलोभनों को सफलतापूर्वक सहन किया, मैथ्यू 4:1। 12 शिष्यों को इकट्ठा करने के बाद, वह उपदेश देता है, सिखाता है, राक्षसों को निकालता है, कई बीमारियों को ठीक करता है, और 12 को तीन साल तक प्रशिक्षित करता है। उनके मंत्रालय का दिल और आत्मा उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान है। यीशु को दो चोरों के बीच क्रूस पर चढ़ाया जाता है, और पश्चाताप करने वाले चोर से वादा करने के बाद, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे, लूका 23:43, यीशु चिल्लाते हैं, यह पूरा हो गया है, यूहन्ना 19, 30, और अपनी आत्मा को मृत्यु में परमेश्वर पिता को सौंप देता है, लूका 23:46।

तीन दिन बाद, यहूदी गणना के अनुसार, वह मृतकों में से जी उठा और एक साथ अपने शिष्यों और 500 मसीहियों सहित कई विश्वासियों के सामने प्रकट हुआ, 1 कुरिन्थियों 15, 6। 40 दिनों तक, वह अपने अनुयायियों को पुराने नियम से अपने मंत्रालय का अर्थ सिखाता है, और आत्मा को उंडेलने का वादा करने के बाद, उनके सामने स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में चढ़ जाता है, लूका 24, 51, जहाँ से वह अपने दूसरे आगमन में लौटने का वादा करता है, यूहन्ना 14, 3। यह बाइबिल की कहानी का एक संक्षिप्त अवलोकन है। मैं चार प्रमुख बिंदुओं पर, बस थोड़ा सा, या कम से कम पहले तीन, सृष्टि, पतन और मुक्ति पर बात करना चाहूँगा। जब हम सृष्टि के बारे में

सोचते हैं, तो सवाल उठता है: यदि पाप न होता तो क्या परमेश्वर के पुत्र का अवतार होता? आप कहते हैं, बिल्कुल नहीं।

दुर्भाग्य से, चर्च के इतिहास में, कुछ लोगों ने वास्तव में तर्क दिया है कि अवतार हुआ होगा। हम कैल्विन से सहमत हैं, जिन्होंने कहा कि अवतार पतन की स्थिति को ठीक करने का ईश्वर का तरीका था। लेकिन कैल्विन ने दूसरी पीढ़ी के लूथरन पादरी और विचारक ओसियनडर के साथ लड़ाई की, जो लूथर की मृत्यु के बाद, अपने दोषपूर्ण विचारों के साथ सामने आए, जिसमें जलसेक द्वारा औचित्य शामिल है, जो रोम के साथ बहुत अधिक मेल खाता है, रोम के साथ सुधार के बजाय, आरोपण के बजाय।

ओसियनडर ने, शायद समझदारी से, क्योंकि लूथर एक बहुत ही मजबूत नेता था, लूथर की मृत्यु तक अपनी शिक्षा को अपने तक ही सीमित रखा। लूथर की मृत्यु के बाद, ओसियनडर ने कहा, ठीक है, उसने उन्हें आसानी से नहीं निपटाया। कैल्विन ने उसके साथ युद्ध किया और उसे हरा दिया।

जैसा कि ओसियनडर ने कहा, हाँ, अवतार पतन के बिना भी हुआ होगा। नहीं, कैल्विन ने कहा, आप बाइबल की कहानी को गलत तरीके से पढ़ रहे हैं। अवतार गिरे हुए मनुष्यों को छुड़ाने के लिए भगवान का बचाव आंदोलन है।

जैसा कि कहानी के सारांश में कहा गया है, जब हम पतन के बारे में सोचते हैं, तो हम तुरंत छुटकारे के पहले वादे के बारे में सोचते हैं। यह कितना उल्लेखनीय है कि बाइबल के तीसरे अध्याय में प्रभु ने छुटकारे का वादा किया है। उत्पत्ति 1 और 2 हमें परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी की रचना, और विशेष रूप से पुरुष और स्त्री को अपनी छवि में बनाने के बारे में बताते हैं।

उत्पत्ति 3 हमारे पहले माता-पिता के पाप में गिरने का वर्णन करता है। पतन के बाद, प्रभु ने सर्प को शाप दिया और घोषणा की कि वह सर्प के बीच और शैतान के बच्चों और परमेश्वर के बच्चों के बीच दुश्मनी पैदा करेगा। प्रभु ने आगे कहा, तत्काल संघर्ष में, स्त्री का एक बीज जो उसकी जाति के लिए खड़ा था, उसे परमेश्वर के दुश्मन द्वारा एक झटका दिया जाएगा।

अंतिम संघर्ष में, क्षमा करें। हालाँकि, शैतान के सिर पर घातक प्रहार होगा। वह स्त्री के बीज से पराजित होगा।

यहाँ, विशेष प्रकाशन के इतिहास की शुरुआत में, परमेश्वर ने अपना अनुग्रह प्रकट किया। आदम और हव्वा द्वारा प्रभु के विरुद्ध विद्रोह करने के कुछ समय बाद, उसने उद्धार का पहला वादा किया। बाइबल में उद्धार का पहला उल्लेख स्त्री के वंश की अंतिम विजय के साथ संघर्ष को शामिल करता है।

यहाँ, शास्त्रों के आरंभ में, हम मसीह के उद्धार कार्य के क्राइस्टस विक्टर विषय की पृष्ठभूमि पाते हैं। मसीह एक शक्तिशाली योद्धा है जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में अपने लोगों के शत्रुओं को पराजित करता है। बाद में, मैं गुस्ताव अलामे की पुस्तक, क्राइस्टस विक्टर के बारे में बात करूँगा, जो ईसाई धर्मशास्त्र में एक तकनीकी शब्द बन गया है।

क्या मैं इस तथ्य से कुछ सीख रहा हूँ कि पहला उल्लेख इस विजय मूल भाव का है? नहीं, लेकिन मैं बस इसे नोट कर रहा हूँ। यह कई मूल भावों में से एक है, जैसा कि हम अपने व्याख्यान श्रृंखला में बाद में सोचेंगे। मैं छह प्रमुख प्रायश्चित, बाइबिल प्रायश्चित विषय, या चित्र या मूल भाव गिनता हूँ।

जैसे-जैसे हम छुटकारे, सृष्टि, पतन, छुटकारे और फिर छुटकारे के अंतर्गत, इस्राएल और कलीसिया की ओर बढ़ते हैं, बेशक, हमारे पास कई उप-विषय हैं। उनमें से एक है निर्गमन 12 में मिस्र से इस्राएल का छुटकारे का। कई बातें कही जा सकती हैं।

एक तो यह मिस्र में दासता से मुक्ति थी। सब्त की आज्ञा देने के बाद, प्रभु ने कहा, याद रखो कि तुम मिस्र में दास थे और प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से वहाँ से निकाल लाया। इसलिए, प्रभु तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सब्त के दिन का पालन करने की आज्ञा दी है, व्यवस्थाविवरण 5:15। भजन 78:42 में परमेश्वर द्वारा इस्राएल को मिस्र में अत्याचारी से छुड़ाने की बात कही गई है।

दूसरा, मिस्रियों की गुलामी से मुक्ति के साथ-साथ मिस्रियों पर न्याय भी आया। निर्गमन 12:29-30 बताता है कि कैसे परमेश्वर ने मिस्रियों के खिलाफ अंतिम और सबसे भयानक विपत्ति भेजी। उसने मिस्र के सभी पहलौठों को मार डाला।

निर्गमन 14:27-28 बताता है कि परमेश्वर ने मिस्र की सेनाओं के लिए समुद्र को बंद कर दिया जो परमेश्वर के लोगों का पीछा कर रही थीं। यहाँ, हम बाइबल के पैटर्न को देखते हैं कि परमेश्वर एक ही समय में न्याय करता है और बचाता है। वह इस्राएल को छुड़ाता है और मिस्र का न्याय करता है।

नए नियम में, मसीह की मृत्यु विश्वासियों के लिए उद्धार है और शैतान, दुष्ट स्वर्गदूतों और पापी विश्व व्यवस्था के लिए न्याय है। जैसा कि हम इस व्याख्यान श्रृंखला में बहुत बाद में देखेंगे, हम मसीह के उद्धार कार्य की दिशा पर विचार करेंगे। संक्षेप में उद्धार कार्य से मेरा तात्पर्य उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से है।

हम देखेंगे कि उसका उद्धार कार्य मानव जाति की ओर निर्देशित है। यह हमारे शत्रुओं को हराने के लिए निर्देशित है, जैसा कि यह अंश भविष्यवाणी करता है। लेकिन सबसे गहराई से, मसीह का कार्य स्वयं परमेश्वर की ओर निर्देशित है।

हम इस श्रृंखला में आगे बढ़ते हुए इसका पता लगाएंगे। पौलुस हमें बताता है कि उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करने का अर्थ है, उन लोगों के लिए जीवन जो बचाए जा रहे हैं और उन लोगों के लिए मृत्यु जो नाश हो रहे हैं। 2 कुरिन्थियों 2.15-16। मसीह विश्वासियों के लिए अनमोल है, लेकिन, उद्धारण, वह एक पत्थर है जो लोगों को ठोकर खिलाता है और एक चट्टान है जो अविश्वासियों को गिरा देती है।

1 पतरस 2:7-8. मिस्र से महान छुटकारे, पुराने नियम की महान उद्धार घटना, भी परमेश्वर के गुणों का प्रदर्शन थी। तीसरा, परमेश्वर अक्सर अपने आपको कर्म, वचन और प्रकाशन के माध्यम से प्रकट करता है। वह बोलता है, और कार्य करता है।

मिस्र से पलायन में उनके रहस्योद्घाटन में यह सत्य है। वचन के माध्यम से, मूसा को प्रभु के वचनों, मूसा और मरियम के गीतों, इत्यादि, और कर्म के माध्यम से, विपत्तियों को भेजने, समुद्र के माध्यम से उद्धार, इत्यादि, परमेश्वर ने मिस्र के झूठे देवताओं के विरुद्ध स्वयं को सच्चे और जीवित परमेश्वर के रूप में प्रकट किया। उसने अपने लोगों को स्वयं को दिखाकर और शत्रु का न्याय करके अपने नाम को महिमा दी।

उसने अपनी शक्ति दिखाई। परमेश्वर ने अपनी महान शक्ति का प्रदर्शन तब किया जब उसने मिस्र को मिस्रियों की गुलामी से मुक्त किया, निर्गमन 13 :3, भजन 78:42। निर्गमन 4:1 इसका परिणाम बताता है, उद्धारण, और जब इस्राएलियों ने मिस्रियों के विरुद्ध प्रभु की महान शक्ति को देखा, तो लोगों ने प्रभु का भय माना और उन पर तथा उनके सेवक मूसा पर भरोसा किया, करीब, उद्धारण। निर्गमन की घटना में परमेश्वर ने अपना क्रोध प्रकट किया।

निर्गमन 15 में मूसा के गीत में मिस्रियों के विरुद्ध परमेश्वर के महान क्रोध को व्यक्त करने के लिए रूपकात्मक भाषा का उपयोग किया गया है, छंद छह से आठ तक। भजन 78:49 से 51 स्पष्ट है। उद्धारण, उसने उनके विरुद्ध अपना उग्र क्रोध, अपना प्रकोप, क्रोध और शत्रुता, विनाशकारी स्वर्गदूतों के एक समूह को उतारा।

उसने अपने क्रोध के लिए एक मार्ग तैयार किया। उसने उन्हें मृत्यु से नहीं बचाया, बल्कि उन्हें महामारी के हवाले कर दिया। उसने मिस्र के सभी पहलौठों को मार डाला।

परमेश्वर ने निर्गमन में अपनी पवित्रता और महिमा प्रकट की। मूसा के गीत में, इस्राएलियों ने शत्रु का नाश करने के लिए प्रभु की स्तुति की। उद्धारण, हे प्रभु, देवताओं में से कौन आपके समान है? आपके समान कौन है, पवित्रता में राजसी, महिमा में विस्मयकारी, अद्भुत कार्य करने वाला? आपने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने उन्हें निगल लिया।

निर्गमन 15:11, और 12. परमेश्वर अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर अपना प्रेम दिखाता है। निर्गमन 3, सात से 10 में, परमेश्वर मिस्र की गुलामी में इस्राएल के कष्टों के लिए अपनी बड़ी चिंता व्यक्त करता है।

भजन 136 परमेश्वर के अविचल प्रेम के लिए उसकी स्तुति से भरा हुआ है। हम पद 10 से 15 तक देखकर चौंक जाते हैं, जहाँ परमेश्वर को उसके प्रेम के लिए सराहा गया है, न केवल इस्राएल को छुड़ाने के लिए बल्कि मिस्र का न्याय करने के लिए भी। जिसने मिस्र के पहिलौठों को मारा, उसका प्रेम सदा बना रहेगा।

उसने इस्राएल को उनके बीच से निकाला, और उसका प्रेम सदा बना रहता है। बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा, उसका प्रेम सदा बना रहता है। जिसने लाल सागर को दो भागों में बाँट दिया, उसका प्रेम सदा बना रहता है।

उसने इस्राएल को इसके बीच से निकाला, और उसका प्रेम सदा बना रहता है। लेकिन फिरौन और उसकी सेना को लाल सागर में बहा दिया, उसका प्रेम सदा बना रहता है। इसके अलावा, निर्गमन की घटना परमेश्वर की वाचा के संदर्भ में निर्धारित की गई थी।

तो, बस समीक्षा करें, निर्गमन की घटना मिस्र के दासत्व से मुक्ति थी। इसके साथ ही मिस्रियों पर न्याय भी हुआ। इसने परमेश्वर के गुणों या विशेषताओं को प्रकट किया, और इसे परमेश्वर की वाचा के संदर्भ में स्थापित किया गया था।

अर्थात्, यह वाचा थी। परमेश्वर ने अपनी वाचा को याद रखा। निर्गमन 2:24.25 बताता है कि परमेश्वर ने उनकी कराह सुनी, और उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा को याद किया।

इसलिए, परमेश्वर ने इस्राएलियों को देखा और उनके बारे में चिंतित था। निर्गमन 6:5 और 6:5 से 8 में कहा गया है, "और मैंने इस्राएलियों का कराहना सुना है, जिन्हें मिस्री लोग गुलाम बनाते हैं, और मैंने अपनी वाचा को याद किया है। इसलिए, इस्राएलियों से कहो, मैं यहोवा हूँ, और मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए के नीचे से निकालूँगा। मैं तुम्हें उनके दास होने से मुक्त करूँगा, और मैं अपनी भुजा बढ़ाकर और न्याय के शक्तिशाली कार्यों के द्वारा तुम्हें छुड़ाऊँगा। मैं तुम्हें अपने लोगों के रूप में अपनाऊँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा। तब तुम जानोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुम्हें मिस्रियों के जूए के नीचे से निकाल लाया, और मैं तुम्हें उस देश में पहुँचाऊँगा जिसे देने की शपथ मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से उठाई थी। मैं इसे तुम्हारे अधिकार में दूँगा। मैं यहोवा हूँ। "

निर्गमन की घटना परमेश्वर की वाचा के संदर्भ में घटित होती है, जिसे उसने स्मरण किया, जिसे उसने इस्राएल के साथ नवीनीकृत किया।

वाचा के इस नवीनीकरण का वर्णन निर्गमन 19:3 से 8 और 24:3 से 8 में किया गया है। बाद के अंश में, "मूसा और इस्राएल के नेता परमेश्वर के पर्वत के पास पहुँचे हैं। केवल मूसा को ही प्रभु के निकट आने की अनुमति थी। मूसा ने इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के वचन और नियम बताए। उन्होंने खुद को प्रभु की आज्ञा मानने के लिए प्रतिबद्ध किया। फिर मूसा ने परमेश्वर के वचन और नियम लिखे। अगली सुबह, मूसा ने पर्वत के नीचे एक वेदी बनाई और इस्राएल के गोत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले 12 पत्थर के खंभे स्थापित किए। प्रभु को भेंट चढ़ाई गई। मूसा ने खून का आधा हिस्सा लिया और उसे कटोरों में डाला, और बाकी आधा हिस्सा उसने वेदी पर छिड़का। फिर उसने वाचा की पुस्तक ली और उसे लोगों को पढ़ा। उन्होंने जवाब दिया, हम वह सब करेंगे जो प्रभु ने कहा है। हम आज्ञा मानेंगे। फिर मूसा ने खून लिया, उसे लोगों पर छिड़का और कहा, यह उस वाचा का खून है जिसे प्रभु ने इन सभी शब्दों के अनुसार तुम्हारे साथ बाँधा है।"

छंद छह से आठ। जब हम छुटकारे के बारे में सोचते हैं, तो पुराने नियम में न केवल निर्गमन की घटना महत्वपूर्ण है, बल्कि लेवीय बलिदान भी महत्वपूर्ण हैं। और वे प्रभु यीशु मसीह के महान और अंतिम बलिदान की भविष्यवाणी करते हैं।

लैव्यव्यवस्था एक से नौ तक। भेंटों के अध्ययन के आधार पर, इस्राएल के धर्म के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। पहला, यह पूरे इस्राएल के लिए एक धर्म था।

पूजा करने वाले की क्षमता के अनुसार बलिदान के क्रम निर्धारित थे। मैं पापबलि का एक उदाहरण दूंगा। कोई मादा भेड़ या बकरी ला सकता था।

लैव्यव्यवस्था 5:6. हालाँकि, "यदि वह मेमना नहीं दे सकता, तो उसे दो कबूतर या कबूतर के दो बच्चे लाने चाहिए। पद 7: लेकिन यदि वह दो कबूतर या कबूतर के दो बच्चे नहीं दे सकता, तो उसे अपने पाप के लिए एक एपा का दसवाँ भाग मैदा पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए।" लैव्यव्यवस्था 5:11.

स्पष्ट रूप से, इस्राएल की बलिदान प्रणाली को परमेश्वर ने आर्थिक स्थिति के कारण किसी को भी बाहर न करने के लिए डिज़ाइन किया था। सभी को पाप बलि चढ़ानी थी। बलिदान पंथियों पर आधारित इस्राएल का धर्म मध्यस्थों को शामिल करने वाला धर्म था।

याजक प्रभु के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। लैव्यव्यवस्था 1:5, 2:2, इत्यादि। लोगों को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की आराधना में शामिल होना था, लेकिन परमेश्वर ने याजकों को लोगों की ओर से कुछ धार्मिक कार्य करने के लिए नियुक्त किया था।

प्रायश्चित के दिन केवल महायाजक ही सबसे पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था। वह एक मध्यस्थ था जो परमेश्वर की उपस्थिति से पहले परमेश्वर का स्थान लेता था। इसके अलावा, बलिदानों पर आधारित, इस्राएल का धर्म एक ऐसा धर्म था जो औपचारिक शुद्धता और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की मांग करता था।

इस्राएल का धर्म मनुष्य द्वारा बनाया हुआ नहीं था। यह सच्चे और जीवित परमेश्वर द्वारा उसे बताया गया था। उसने इस्राएल के लिए नियम बनाए थे।

इस्राएल की बलिदान प्रणाली का अस्तित्व ही दर्शाता है कि परमेश्वर ने औपचारिक शुद्धता और आज्ञाकारिता की मांग की थी। उसके लोगों को अपने पापों का प्रायश्चित करने और उनकी दृष्टि में उन्हें शुद्ध बनाने के लिए बलिदान और आज्ञाकारिता लानी चाहिए। लैव्यव्यवस्था 16:30 खूबसूरती से कहता है, यह प्रायश्चित के महान वार्षिक दिन पर होगा।

इस्राएल का धर्म प्रतिनिधित्व या प्रतिस्थापन से जुड़ा हुआ धर्म था। जैसा कि हम लैव्यव्यवस्था 1:4 में पढ़ते हैं, व्यक्तिगत इस्राएलियों के लिए बलिदान का प्रतिस्थापन था। उसे अपना हाथ रखना है, ध्यान दें कि हाथ कैसे पहचान का साधन था, होमबलि के सिर पर, और यह उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए उसकी ओर से स्वीकार किया जाएगा, उद्धरण समाप्त करें। इसी तरह, पूरे राष्ट्र को, अपने बुजुर्गों द्वारा प्रतिनिधित्व करते हुए, प्रभु के सामने पापबलि लाने की आवश्यकता थी।

लैव्यव्यवस्था 4:15. प्रायश्चित के दिन, महायाजक को होमबलि के सिर पर दोनों हाथ रखने थे, और उसके लिए प्रायश्चित करने के लिए यह उसकी ओर से स्वीकार किया जाएगा, उद्धरण

समाप्त करें। इसी तरह, पूरे राष्ट्र को, अपने बुजुर्गों द्वारा प्रतिनिधित्व करते हुए, प्रभु के सामने पापबलि लाने की आवश्यकता थी।

लैव्यव्यवस्था 4:15. प्रायश्चित के दिन, मुझे अपने आप को दोहराने के लिए क्षमा करें, जब महायाजक ने जीवित बकरे के सिर पर दोनों हाथ रखे और इस्राएलियों की सारी दुष्टता और विद्रोह, उनके सारे पापों को स्वीकार किया, और उन्हें बकरे के सिर पर रख दिया, लैव्यव्यवस्था 16:21. इसके अलावा, बलिदान पर आधारित इस्राएल का धर्म, जीवन देने और खून बहाने वाला धर्म था।

भगवान ने आदेश दिया कि बलि में लाए गए जानवरों को मार दिया जाए। उन्होंने बहाए जाने वाले खून के हेरफेर के बारे में विस्तृत निर्देश दिए। इस सिद्धांत को अंतिम सिद्धांत के साथ जोड़कर, हम सीखते हैं कि बलि का जीवन दिया गया था, और जानवर का खून उस पापी के स्थान पर बहाया गया था जिसने उन्हें लाया था।

भगवान ने जानवरों के जीवन और हिंसक मौत को स्वीकार किया। लियोन मॉरिस ने अपनी उत्कृष्ट पुस्तक, द अपोस्टोलिक प्रीचिंग ऑफ द क्रॉस में मुझे आश्चर्य किया है कि पापियों के बजाय बलिदान के संदर्भ में रक्त बहाए जाने का यही अर्थ है। यह जानवरों की हिंसक मौत की बात करता है।

अंततः, नए नियम में, मसीह का रक्त क्रूस पर उसकी हिंसक मृत्यु है, जो पापियों के लिए प्रायश्चित है। इस्राएल के धर्म में प्रायश्चित और क्षमा शामिल थी। यह पंथ में शामिल था, और आज उदार विद्वान इन चीजों को बाहर निकालना चाहते हैं, पुराने नियम में बलिदान के बिना धर्म।

यह पुराने नियम का धर्म नहीं है। यह एक और धर्म है जिसे वे अपनी इच्छाओं के अनुसार और अपनी छवि में बना रहे हैं। हम इसके कुछ ही उदाहरण देखेंगे।

लैव्यव्यवस्था 5:10 में, हम पढ़ते हैं, लैव्यव्यवस्था 6:7 इस गवाही को पुष्ट करता है जब यह दोषबलि के बारे में कहता है, जैसा कि हम नए नियम में देखेंगे, नया नियम स्वयं प्रभु यीशु की बचाने वाली मृत्यु के महत्व को समझाने में इस पुराने नियम की बलिदान संबंधी शिक्षा का उपयोग करता है। पाँचवाँ विषय, जैसा कि हम बाइबिल की कहानी के अधिक विस्तृत उपचार के माध्यम से अपना काम करते हैं, और विशेष रूप से यह सृष्टि, पतन, छुटकारे से संबंधित है, यिर्मयाह 31 की नई वाचा है। यिर्मयाह 31:31-32 में, यह भविष्यवाणी है: इस प्रकार परमेश्वर भविष्य के समय की भविष्यवाणी करता है जिसमें वह मूसा की वाचा को एक नई वाचा से बदल देगा।

चूँकि नया नियम सिखाता है कि हमारे प्रभु की मृत्यु नई वाचा का उद्घाटन थी, इसलिए यह सिखाता है कि यीशु के यूचरिस्टिक शब्दों में, हम यिर्मयाह द्वारा भविष्यवाणी की गई इस नई वाचा की कुछ विशेषताओं पर ध्यान देना चाहते हैं। यह जेकेल के अध्याय 36 और 37 में भी, लेकिन हम सिर्फ इसी पाठ पर बने रहेंगे क्योंकि इसमें स्पष्ट रूप से नई वाचा का उल्लेख है, और इब्रानियों 8 में यिर्मयाह 31 से विस्तृत रूप से उद्धरण दिया गया है जब इब्रानियों के लेखक ने

मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रकाश में नई वाचा की व्याख्या की है। नई वाचा में परमेश्वर के नियम को आत्मसात करना शामिल है।

ऊपर उद्धृत आयतों में, परमेश्वर ने कहा कि नई वाचा पुरानी वाचा की तरह नहीं होगी क्योंकि इस्राएल ने परमेश्वर की पुरानी वाचा को तोड़ा था। इस्राएल ने अपने पति, प्रभु की अवज्ञा की थी। नई वाचा इस मायने में अलग होगी कि परमेश्वर के लोग अपने दिल से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेंगे।

यिर्मयाह 31:33 इस नई वाचा के मार्ग का वर्णन करता है। "मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में डालूँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।"

परमेश्वर अपने लोगों के भीतर अपना वचन डालेगा। उसका नियम आंतरिक होगा। पुराने नियम के तहत इस्राएल की अवज्ञा के विपरीत, नए नियम में लोगों की प्रभु के प्रति स्वतंत्र आज्ञाकारिता की पहचान होगी।

बेशक, उनके जीवन में काम करने वाली आत्माओं द्वारा। नई वाचा की विशेषता परमेश्वर के साथ एक रिश्ते से होगी। नई वाचा की दूसरी विशेषता यह है कि प्रभु और उसके लोगों के बीच और उनके और उसके बीच एक नया रिश्ता होगा।

नया करार परमेश्वर के उस वादे की पूर्ति होगी जो उसने अब्राहम से किया था। मैं अपनी वाचा को अपने और तुम्हारे और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों के बीच एक सदा की वाचा के रूप में स्थापित करूँगा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों का परमेश्वर बनूँ। उत्पत्ति 17:7. यिर्मयाह 31:33 में, परमेश्वर कहता है, उद्घरण, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे।

नई वाचा परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक व्यक्तिगत संबंध की स्थापना द्वारा चिह्नित की जाएगी। वह उनका होगा, और वे उसके होंगे। यिर्मयाह 31:34 में प्रभु का अर्थ लगभग वैसा ही है, "अब कोई अपने पड़ोसी या अपने भाई को यह नहीं सिखाएगा कि प्रभु को जानो, क्योंकि वे सब मुझे जानेंगे, छोटे से लेकर बड़े तक।"

नई वाचा के तहत, परमेश्वर के लोग उसके साथ एक व्यक्तिगत संबंध का आनंद लेंगे। अंत में, नई वाचा की विशेषता पापों की क्षमा होगी। नई वाचा की तीसरी विशेषता यिर्मयाह 31:34 में दी गई है।

परमेश्वर कहता है कि इस्राएल उसे निम्नलिखित कारण से जानेगा, "क्योंकि मैं उनकी दुष्टता को क्षमा करूँगा और उनके पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा।" परमेश्वर के नए करार के लोग अपने पापों की क्षमा को पहले से कहीं अधिक नए और पूर्ण तरीके से जानेंगे। यिर्मयाह 31 में मसीहा या उसके उद्धारक कार्य का कोई उल्लेख नहीं है।

और फिर भी, जैसा कि परमेश्वर की योजना शास्त्र में प्रकट होती है, यह मसीह की मृत्यु है जो नई वाचा, लूका 22:20 को पुष्ट करती है, और इब्रानियों में वर्णित परमेश्वर के लोगों के लिए लाभ प्राप्त करती है। थोड़ी देर के लिए बाइबिल की कहानी के बारे में सोचने के बाद, आइए एक पैनोरमा के

रूप में उद्धार की ओर बढ़ते हैं। उद्धार की योजना बनाई जाती है, उसे पूरा किया जाता है, लागू किया जाता है, और उसे पूर्ण किया जाता है।

अगर हम देखें कि धर्मशास्त्र उद्धार के बारे में क्या सिखाता है, खास तौर पर नए नियम के नज़रिए से, नए नियम की पूरी कहानी को देखते हुए, हम पाते हैं कि उद्धार एक विस्तृत परिदृश्य है। यह एक परिदृश्य है। परमेश्वर एक विस्तृत ब्रश से चित्र बनाता है।

और उद्धार के समय के बारे में सोचना ही हमें यह समझने में मदद करेगा। परमेश्वर ने संसार की रचना से पहले ही उद्धार की योजना बना ली थी। उसने अपने बेटे के काम से पहली सदी में उद्धार को पूरा किया।

और बेशक, यही इस पाठ्यक्रम का केंद्रबिंदु है। लेकिन इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, हम इसे उद्धार के इस संदर्भ में एक परिदृश्य के रूप में रखना चाहते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से आत्मा द्वारा उद्धार प्रदान करता है।

और परमेश्वर केवल मसीह के दूसरे आगमन पर उद्धार को पूर्ण करेगा। आइए हम इन बातों को थोड़ा और विस्तार से देखें। उद्धार की योजना परमेश्वर द्वारा अपने लिए लोगों के चुनाव से संबंधित है।

हम इसके बारे में कई जगहों पर पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, इफिसियों 1 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने हमें, अर्थात् मसीह में विश्वासियों को, संसार की रचना से पहले चुना, ताकि हम उसके सामने पवित्र और निर्दोष रहें। सुंदर लंबे पैराग्राफ के रूप में, इफिसियों 1:3 से 14 तक ग्रीक में एक पैराग्राफ, अंग्रेजी बाइबिल अनुवादकों ने इसे विभाजित किया है ताकि हम इसे बेहतर ढंग से समझ सकें।

लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, हमारे पास उल्लेखनीय शब्द हैं। मसीह में, पद 7, हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिलता है, पापों की क्षमा। यह मसीह के प्रायश्चित को एक छुटकारे के रूप में बताता है, उन छह प्रमुख बाइबिल चित्रों में से एक जिसे हम बाद में विकसित करेंगे।

अपने अनुग्रह के धन के अनुसार, जिसे उसने सारी बुद्धि और समझ सहित हम पर उदारता से बरसाया, और अपनी इच्छा का भेद हमें बताया। अपने उस उद्देश्य के अनुसार, जिसे उसने मसीह में समय के पूरे होने की योजना के रूप में प्रस्तुत किया, कि स्वर्ग की और पृथ्वी की, सब वस्तुओं को उसमें एक कर दे। परमेश्वर ने जगत की रचना से पहले ही उद्धार की योजना बना ली थी।

समय की परिपूर्णता में, गलातियों 4:4 कहता है, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन जन्मा, कि व्यवस्था के अधीनों को छुड़ाए, कि हम पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने का अधिकार प्राप्त करें। यहाँ, समय की परिपूर्णता का उपयोग उस अंत के लिए भी किया गया है जिसमें परमेश्वर सभी चीजों को मसीह में एक कर देगा, जिसे बाइबल के अनुसार समझा जाता है। 1 पतरस 1:18 और 19, इसी तरह, परमेश्वर की योजना के संदर्भ में परमेश्वर के पुत्र के बारे में बात करता है।

1 पतरस 1:18, विश्वासियों को परमेश्वर से प्रेम करते हुए और साथ ही परमेश्वर का भय मानते हुए जीना चाहिए, 1 पतरस 1:18, कि तुम्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली व्यर्थ चालों से छुटकारा मिला है, न कि चाँदी और सोने जैसी नाशवान वस्तुओं से, बल्कि मसीह के बहुमूल्य लहू से। एक बार फिर, यह छुटकारे का विषय है। यहाँ, फिरौती की भाषा का उपयोग किया गया है।

यही छुटकारे की कीमत है। इसी तरह, मसीह के बहुमूल्य लहू से, हमें छुड़ाया जाता है, न कि चाँदी और सोने से। शायद यह इस्राएलियों के छुटकारे का संदर्भ है, क्योंकि परमेश्वर ने लेवी के गोत्र को अपने लिए दावा किया था, और पुरुषों की संख्या में अंतर को चाँदी और सोने के भुगतान से पूरा किया गया था।

लेकिन आप मसीह के बहुमूल्य लहू से छुड़ाए गए हैं, जैसे कि एक निर्दोष या दाग रहित मेमने का लहू। वह दुनिया की नींव रखने से पहले ही जाना जाता था। यह परमेश्वर की एक पूर्व-अस्थायी योजना है, लेकिन आपके लिए इन अंतिम समयों में प्रकट की गई थी, जो उसके माध्यम से परमेश्वर में विश्वास करते हैं, जिन्होंने उसे मृतकों में से उठाया और उसे महिमा दी ताकि आपका विश्वास और आशा परमेश्वर में हो।

और फिर प्रकाशितवाक्य 13 :8, परमेश्वर के मेमे के बारे में बात करता है। यहाँ, मैं अपने पसंदीदा ESV के बजाय NIV को उद्धृत करने जा रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि ग्रीक का अनुवाद अलग-अलग तरीकों से किया जा सकता है, लेकिन मुझे ज़्यादा पारंपरिक पढ़ना पसंद है, जो मसीह को परमेश्वर के मेमे के रूप में बताता है, जिसे दुनिया के निर्माण से पहले मार दिया गया था।

बेशक, मसीह देहधारण करने से पहले नहीं मरा था, इसलिए इस तरह की भाषा, दुनिया के निर्माण से पहले मेमे का वध, परमेश्वर की योजना की बात करती है कि वह अपने बेटे को मनुष्य बनने के लिए भेजे, और अंततः क्रूस पर अपनी मृत्यु में प्रायश्चित्त करने के लिए परमेश्वर-मनुष्य के रूप में भेजे। उद्धार एक पैनोरमा है। यह सृष्टि से पहले परमेश्वर की योजना से शुरू होता है।

उसने न केवल अपने लिए लोगों को चुना बल्कि मसीहा को भी चुना। यशायाह 42:1 में उसके बारे में कहा गया है कि वह परमेश्वर द्वारा चुना गया है। इसी तरह, 1 पतरस 1:20 में पूर्वज्ञान की भाषा में, वह संसार की नींव से पहले ही जाना गया था।

नए नियम में पूर्वज्ञान के अलग-अलग अर्थ हैं। इस संदर्भ में, इसका मतलब है कि पिता ने पुत्र को उद्धारकर्ता के रूप में अपनी भूमिका के लिए चुना था। इसलिए, उद्धार की योजना सृष्टि से पहले बनाई गई थी, लेकिन हम सृष्टि से पहले जीवित नहीं थे।

कोई भी मनुष्य नहीं बचा। इसलिए, तब कोई भी नहीं बचा, लेकिन आप कह सकते हैं, ठीक है, अगर भगवान ने इसकी योजना बनाई, तो यह निश्चित है कि वे आएंगे, और भगवान पतन की अनुमति देंगे, और लोग बच जाएंगे। मैं इन सब बातों से सहमत हूँ, लेकिन उद्धार की योजना केवल भगवान ने नहीं बनाई थी; उद्धार को भगवान द्वारा पूरा किया जाना था।

अब आप घबरा रहे होंगे। ज़रा रुकिए; यह काम जैसा लग रहा है। यह काम है।

हमारे काम नहीं, बल्कि मसीह के काम। शास्त्र इतना स्पष्ट है कि उद्धार विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से होता है, न कि कामों से। मैं उस श्लोक के बारे में सोचता हूँ जिसका उपयोग प्रभु ने मेरी पत्नी मैरी पैट को अपने पास लाने के लिए किया था।

यहाँ एक महिला है। आस्तिक बनने से पहले, वह मानसिक रूप से विकलांग वयस्कों के लिए एक बाल गृह में काम करती थी और अपनी छुट्टियों के दौरान, सड़क पर प्रचार करने जाती थी। आप सड़क पर प्रचार कैसे कर सकते हैं? जाहिर है, वह सोचती थी कि वह एक ईसाई है और वह एक ऐसे समूह का हिस्सा है जो ईश्वर में विश्वास करता है।

वे पार्किंग स्थल और बाकी सब चीजों के लिए भगवान पर भरोसा करते थे क्योंकि वे अपना टुक खोल देते थे, और लोग गवाही देते थे, और उसने अपनी गैर-गवाही दी, और एक साथी कार्यकर्ता ने कहा, मैरी, तुम बस तब खुद नहीं थी। तुम अपनी चुलबुली शख्सियत नहीं थी, और उसने उसे इफिसियों 2:8, और 9 समझाया, क्योंकि अनुग्रह से तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो, और यह तुम्हारा उद्धार नहीं है। यह भगवान का काम है ताकि कोई भी उसके सामने घमंड न करे, और उसने विश्वास किया और फिर अगली बार देने के लिए उसके पास गवाही थी।

हम अपने कामों से नहीं बचाए जाते, लेकिन हम निश्चित रूप से परमेश्वर के पुत्र के कामों, उद्धार के काम से बचाए जाते हैं। यीशु ने अपनी मृत्यु में उद्धार प्राप्त किया, लेकिन नए नियम के अनुसार, और यहाँ तक कि यशायाह 53 में पहले से ही भविष्यवाणी की गई है, उसकी मृत्यु उसके पुनरुत्थान से अविभाज्य है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि पुनरुत्थान क्रूस के अलावा बचाता है, लेकिन मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि क्रूस उसके पुनरुत्थान के अलावा बचाता है।

वे अविभाज्य हैं। केल्विन सही थे जब उन्होंने कहा, और वह व्याख्याशास्त्र के संदर्भ में सोच रहे थे, कि यह एक खराब व्याख्या है, लेकिन यह उनके कहने का सार है। उद्धार यीशु द्वारा मृत्यु को बचाने और विजयी पुनरुत्थान द्वारा पूरा किया जाता है।

पवित्रशास्त्र कभी-कभी इसे इस तरह प्रस्तुत करता है, दोनों को देते हुए। 1 कुरिन्थियों 15:3, और 4, रोमियों 10:9, और 10 याद आते हैं, लेकिन, केल्विन ने कहा, आमतौर पर पवित्रशास्त्र केवल एक या दूसरे का उल्लेख करता है, और सिनकेडोक नामक भाषण के अलंकार के आधार पर, यह वहाँ आता है, जिसका अर्थ है भाग के लिए एक पूरा, या इस मामले में, पूरे के लिए एक हिस्सा, जब पवित्रशास्त्र क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति का उल्लेख करता है, तो हमें यह समझना चाहिए कि इसका अर्थ यह भी है कि वह जी उठा था, और जब पवित्रशास्त्र उसके पुनरुत्थान का उल्लेख करता है, तो हमें निश्चित रूप से यह समझना चाहिए कि यह उसका पुनरुत्थान है जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया। वास्तव में, मैं प्रभु यीशु मसीह की नौ उद्धारक घटनाओं को गिनता हूँ।

हृदय और आत्मा, जो उसके उद्धार कार्य का केंद्र है, उसकी अविभाज्य मृत्यु और पुनरुत्थान है, लेकिन जैसा कि हम आने वाले व्याख्यानों में देखेंगे, मृत्यु और पुनरुत्थान अकेले नहीं हैं। वे यीशु

की विशाल सेवकाई द्वारा सन्दर्भित हैं। पहले से ही, स्वर्ग में उद्धार की योजना बनाई गई है, लेकिन यह स्वर्ग में पूरा नहीं हुआ; यह पृथ्वी पर पूरा हुआ, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र को दुनिया का उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजा, जैसा कि 1 यूहन्ना हमें बताता है, और यह अवतार की बात करता है।

अवतार एक उद्धारक घटना है, अपने आप में नहीं, जिसकी कभी-कभी पूर्वी रूढ़िवादिता आलोचना करती है, और शायद सही भी है, लेकिन ईश्वर के पुत्र का अवतार मोक्ष के लिए एक आवश्यक शर्त है। स्वर्ग में ईश्वर अपने लोगों के पापों के लिए नहीं मर सकता। पृथ्वी पर ईश्वर अपने लोगों के पापों के लिए मर सकता है, और यह एक रहस्यमय कथन है, लेकिन क्रूस रहस्यमय है क्योंकि जो मरा वह ईश्वर है।

यह सच है कि परमेश्वर मर नहीं सकता, लेकिन इफिसियों 2, इब्रानियों 2:15 कहता है, पुत्र मनुष्य इसलिए बना कि मृत्यु के द्वारा वह शैतान को हरा सके और अपने लोगों को मुक्ति दिला सके। इसलिए, परमेश्वर मर नहीं सकता, लेकिन जो मरा वह परमेश्वर था, और देहधारण मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए पहली अनिवार्य शर्त है। दूसरी अनिवार्य शर्त उसका पाप रहित जीवन है।

अगर यीशु ने पाप किया होता, तो हम बच नहीं पाते। मैं श्रद्धापूर्वक बोल रहा हूँ। अगर उसने पाप किया होता, तो उसे एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत होती, लेकिन बेशक, परमेश्वर की स्तुति हो, उसने पाप नहीं किया।

इसलिए, मैं दो आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ देखता हूँ: अवतार और पाप रहित जीवन। हम इन बातों पर बहुत विस्तार से काम करेंगे, यह देखते हुए कि कैसे शास्त्र स्वयं कहता है कि वह इन सटीक शब्दों के बिना सिखाता है, लेकिन शब्दों का अर्थ यह है कि वे उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान की आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ हैं। मैं बस यह उल्लेख करूँगा कि, बेशक, उसकी मृत्यु उसके पुनरुत्थान के साथ-साथ बचाती है, लेकिन फिर उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के पाँच आवश्यक परिणाम या परिणाम हैं, जो उसके उद्धार कार्य, उसकी उद्धार उपलब्धि का हिस्सा हैं।

बस समीक्षा करने के लिए, परमेश्वर ने अनंत काल में उद्धार की योजना बनाई थी; उसने इसे पहली शताब्दी में पूरा किया, और वास्तव में, उसने इसे तब पूरा किया, और वह मसीह के इन अंतिम कुछ उद्धारकारी घटनाओं के कारण मसीह के फिर से आने तक इसे पूरा करेगा। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, पृथ्वी से स्वर्ग में उसका आरोहण यीशु का एक उद्धारकारी कार्य है, जो उसे सीमित समय-बद्ध सांसारिक क्षेत्र से असीमित पारलौकिक स्वर्गीय क्षेत्र में ले जाता है, जिस समय वह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर बैठता है। हम इसे उसका सत्र कहते हैं, उसका परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठना।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों की पुस्तक में इसे एक उद्धारक घटना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह स्वर्गीय भविष्यद्वक्ता के रूप में विराजमान है। वह महान पुजारी के रूप में विराजमान है जिसका कार्य पूर्ण रूप से संपन्न है और परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया है और इसलिए, जो कोई भी विश्वास करता है उसके लिए वह पूरी तरह से प्रभावकारी है।

वह राजा के रूप में भी बैठता है, अपने वचन और आत्मा के माध्यम से अपने लोगों पर शासन करता है, उस दिन की प्रतीक्षा करता है जब वह वापस आएगा और पूरी पृथ्वी पर बाहरी रूप से शासन करेगा। स्वर्गारोहण, सत्र, पिन्तेकुस्त। यीशु ने योएल 2 में योएल की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए पिन्तेकुस्त पर आत्मा को उंडेला, जो यहजकेल 36-37 और उन नई वाचा के वादों के साथ संयोजन में है। यीशु के उद्धार कार्य का उतना ही हिस्सा है जितना मरना और फिर से जी उठना।

हाँ, पिता और पुत्र, लेकिन विशेष रूप से, प्रेरितों के काम हमें सिखाते हैं कि पुत्र चर्च पर पवित्र आत्मा उंडेलता है। सभी चार सुसमाचारों में, जॉन द बैपटिस्ट ने कहा, मैं तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ। तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है जो तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।

यीशु ने सुसमाचारों में ऐसा नहीं किया। सुसमाचार, विशेष रूप से लूका, पहले कुछ अध्यायों में प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए पुकारते हैं। और वहाँ, मसीहा, जिसने अपने बपतिस्मा में आत्मा प्राप्त की, कलीसिया पर नवीनता और महान शक्ति के साथ आत्मा को उंडेलता है।

यदि उसने अपनी मृत्यु में एक नई वाचा की पुष्टि की, तो यहाँ वह एक नई वाचा का विस्तार करता है और घोषणा में उसे विस्फोटित करता है। और एक सप्ताह में उसके पास उद्धार पाने वाले लोगों की संख्या, संभवतः उसके पूरे साढ़े तीन साल के सार्वजनिक मंत्रालय में भी नहीं थी, क्योंकि लूका कहता है, हे थिओफिलस, मैंने अपने पिछले लेखन में तुम्हें लिखा था कि यीशु ने क्या करना और सिखाना शुरू किया, जिस दिन तक वह उठा लिया गया। जैसा कि हॉवर्ड मार्शल ने अपनी पुस्तक, लूका, इतिहासकार और धर्मशास्त्री में दिखाया है, इसका निहितार्थ अब प्रेरितों के काम में है, वह लिखता है कि यीशु अपनी आत्मा के द्वारा क्या करना और सिखाना जारी रखता है, जब परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठता है और आत्मा को उंडेलता है।

पिन्तेकुस्त यीशु के उद्धार कार्य का हिस्सा है। इसी तरह अपने लोगों के लिए उनकी मध्यस्थता भी है। रोमियों 8, शायद यह श्लोक 34 है, वह हमारे लिए प्रार्थना करता है।

इब्रानियों 7:25, उसकी मध्यस्थता में उसके द्वारा अपने पूर्ण किए गए कार्य, स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में अपने बलिदान को प्रस्तुत करना शामिल है। इन दोनों तरीकों से, वह अपने लोगों के उद्धार को सुरक्षित रखता है। वह हमें सुरक्षित रखता है।

वह भी उसके उद्धार कार्य का हिस्सा है। उसके उद्धार कार्य का अंतिम समापन, उसकी पराकाष्ठा, दूसरा आगमन है, जो उसका उद्धार कार्य है। इसलिए, उद्धार की योजना सृष्टि से पहले बनाई गई थी क्योंकि यीशु वह मेमना है जो संसार के निर्माण से पहले मारा गया था।

परमेश्वर ने उसे भेजने की योजना बनाई थी और वह मरेगा और जी उठेगा। यीशु का उद्धार कार्य पहली सदी में पूरा हुआ था। लेकिन हम पहली सदी में नहीं बचाए गए क्योंकि हालाँकि हममें से कुछ की उम्र बढ़ रही है, मैं 72 की सही उम्र में हूँ, कुछ महीनों में 73 साल का होने वाला हूँ।

जब तक पवित्र आत्मा हमारे जीवन में उद्धार लागू नहीं करता, तब तक हम उद्धार नहीं पा सकते। परमेश्वर ने उद्धार की योजना बनाई। यीशु ने इसे पूरा किया।

उन्होंने उद्धार के लिए आवश्यक सभी कार्य किए। हम देखेंगे कि उनका कार्य इतना शानदार है कि यद्यपि परमेश्वर ने वास्तव में पुराने नियम के संतों को उनके पापों को क्षमा किया, लेकिन उस घटना का अंतिम आधार या आधार, इब्रानियों 9.23, वह था जो यीशु ने क्रूस पर किया था। क्रूस पर उनकी मृत्यु ने क्रूस पर मरने से पहले पुराने नियम के संतों के उद्धार के लिए लाभ उठाया।

यह अविश्वसनीय है। तो, उसका एक बलिदान सभी लोगों को बचाता है; मैं इसे दो तरीकों से कहूँगा: सभी युगों के सभी चुने हुए लोग और सभी युगों के सभी विश्वासी सभी समय के लिए। यह कितना बड़ा बचाव कार्य है।

मैं आश्चर्यचकित था, और मैंने यीशु के उद्धारक कार्य की महानता का वर्णन करने की कोशिश में अपने कंप्यूटर थिसॉरस को थका दिया। इंटरगैलेक्टिक? मेरे पास शब्द नहीं हैं। यह कल्पना से परे महान है।

उद्धार आत्मा द्वारा लागू किया जाता है, जो मसीह के कार्य को उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में लागू करता है, विशेष रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए। रोमियों 6 में, पौलुस विश्वासियों को याद दिलाता है कि मसीही बपतिस्मा मसीह के साथ उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में एकता को दर्शाता है। पाप में बने रहो ताकि अनुग्रह बढ़ता रहे।

पॉल का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच जाता है। काश ऐसा कभी न हो! वह कहता है, यह भयानक है। क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम्हारा बपतिस्मा हुआ है? और ईसाई बपतिस्मा का सबसे गहरा अर्थ है मसीह के साथ उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में एक होना।

जब आपने बपतिस्मा लिया तो आप पाप के लिए मर गए। जब परमेश्वर ने आपको आध्यात्मिक रूप से अपने पुत्र के साथ जोड़ा तो आप जीवन की नई अवस्था में जी उठे। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में उसके साथ एकता उद्धार के अनुप्रयोग के बारे में बोलने का सबसे व्यापक तरीका है, जिसमें पुनर्जन्म, बुलावा, औचित्य, पवित्रीकरण, गोद लेना, दृढ़ता, और इसी तरह की अन्य बातें शामिल हैं।

परमेश्वर द्वारा मसीह के पूर्ण कार्य को अपने लोगों के जीवन में लागू करने के बारे में बात करने के वे सभी अद्भुत तरीके, उनके अपने जीवन, इतिहास, कहानी, जीवन में। 1 पतरस 1:3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने हमें नया जन्म दिया है। यह समय और स्थान में है।

हम आत्मिक मृत्यु से आत्मिक जीवन की ओर जाते हैं। उसने हमें यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के द्वारा फिर से जन्म दिया है। यीशु जीवित है।

इसलिए, जब आत्मा उन्हें पुनर्जीवित करती है और उन्हें नया जीवन देती है, तो उसके लोग परमेश्वर के पास जीवित हो जाते हैं। यही मृत्यु का अनुप्रयोग है और, इस मामले में, मसीह का पुनरुत्थान उसके लोगों के जीवन में है। यदि हम पूरे बाइबिल की कहानी को नए नियम के परिप्रेक्ष्य से देखें तो उद्धार वास्तव में एक परिदृश्य है।

इसकी योजना अनंत काल में बनाई गई थी, इसे पुत्र ने पहली सदी में पूरा किया, इसे परमेश्वर की आत्मा ने विश्वासियों के जीवन की कहानियों में लागू किया, और यह तभी पूरा हुआ जब यीशु फिर से आए। मैं अंतिम बातों को संक्षेप में बताना चाहता हूँ। मुझे पता है कि लगभग खून-खराबा होने वाला है।

यह पहले जितना बुरा नहीं है। आज, ईसाई लोग भले ही सहस्राब्दी या उन चीजों के किसी अन्य पहलू से असहमत हों, फिर भी वे साथ-साथ रहते हैं। मैं इन चार सच्चाइयों पर ज़ोर देना चाहता हूँ जिन्हें विश्वासियों ने पहली सदी से ही माना है।

आइए हम इन पर एकजुट हों। आइए हम अन्य चीजों पर काम करें और उन्हें पूरा करते हुए एक-दूसरे से प्यार करें। मसीह का दूसरा आगमन, मृतकों का पुनरुत्थान, अंतिम न्याय, और फिर स्वर्ग और नरक की अनंत नियति।

दूसरा आगमन, पुनरुत्थान, अंतिम न्याय, अनन्त नियति। मैं और अधिक स्पष्ट रूप से बताऊँगा। अनन्त नियति में खोए हुए लोगों के लिए अनन्त नरक शामिल है, लेकिन इसमें जीवन के लिए पुनरुत्थान, परमेश्वर के सभी लोगों के लिए नए स्वर्ग के नीचे नवीनीकृत पृथ्वी पर अनन्त जीवन शामिल है।

व्यक्तियों को जीवन के लिए क्यों उठाया जाएगा? क्योंकि यीशु मरा और फिर से जी उठा। क्यों पूरी कलीसिया, सभी युगों के परमेश्वर के सभी लोग, इस्राएल और कलीसिया, नई पृथ्वी पर नए जीवन के लिए उठाए जाएँगे? क्योंकि यीशु ने उनसे प्रेम किया, मरा और फिर से जी उठा। नया स्वर्ग और नई पृथ्वी क्यों होगी? क्योंकि यीशु मरा और फिर से जी उठा।

जैसे-जैसे हम व्याख्यानों को पढ़ते हैं, हम देखेंगे कि मसीह वास्तव में सृष्टि को छुड़ाता है, रोमियों 8. वह स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ता है, कुलुस्सियों 1. और फिर, छुटकारे का विषय संभवतः इफिसियों 1 के अंश में हो सकता है जिसे मैंने पहले पढ़ा था, श्लोक 7 से 10. तो यह हमें एक शुरुआत देता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम धर्मशास्त्रीय पद्धति के बारे में सोचेंगे, कि हम धर्मशास्त्र करने के बारे में कैसे सोचते हैं, ताकि हम इन महत्वपूर्ण चीजों को संबोधित करने के अपने तरीके में जानबूझकर हो सकें।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 1, परिचय, भाग 1, बाइबिल की कहानी, उद्धार की योजना, उसे प्राप्त करना, लागू करना और उसे पूर्ण करना है।